विषय-सूचि

क्रम नं. विषय पृष्ठ	क्रम नं. विषय पृष्ठ
१ धवलाकारका मंगलाचरण १ वेदना खण्डके प्रारम्भमें भगवान् भूतबलि द्वारा किया गया मंगल २ मंगलका स्वरुप व उसका प्रयोजन २ ३ नामादिकके भेदसे चार प्रकारके जिनोंका स्वरुप ६ ४ उक्त चार भेदोंमें विभक्त जिनोंमेंसे यहां कौनसे जिनके लिये नमस्कार किया गया है ८ ५ देश व सकल जिनोंका स्वरुप १० अवधिजिन-नमस्कारमें अवधि शब्दके अर्थपर विचार १२	७ जघन्य अवधिके विषयभूत द्रव्यकी प्ररुपणा १४ जघन्य अवधिज्ञानके विषयभूत क्षेत्रकी प्ररुपणामें अवगाहना-विषयक अल्पबहुत्व १७ सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना प्रमाण जघन्य अवधिका क्षेत्र २१ ११ जघन्य अवधिके विषयभूत भावकी प्ररुपणा २६ अवधिके विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावके द्वितीयादि विकल्प २८ देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावका प्रमाण ३५ १४ अवधिजिनोंका स्वरुप ४०

क्रम नं. विषय पृष्ठ	क्रम नं. विषय पृष्ठ
परमावधिजिन-नमस्कारमें परमावधिजिनोंका स्वरुप ४१ परमावधिके विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र,	४१ अघोरगुणब्रह्मचारियोंका स्वरुप ९४ ४२ आमर्षौषाधि ऋध्दि ९५

	काल व भावकी प्ररुपणा		४३	खेलौषधि ऋध्दि	
	४२			९६	
सर्वावधिजिन-नमस्कारमें			४४	जल्लौषधि ऋध्दि	
	सर्वावधिजिनोंका स्वरुप			९६	
	४७		४५	विष्ठौषधि ऋध्दि	
सर्वावधिकेविषयभूत द्रव्य, क्षेत्र,				९७	
काल व भावकी प्ररुपणा		४८	४६	सर्वौषिधि ऋध्दि	
अनन्तावधिजिन-नमस्कारमें				९७	
	अनन्तावधिजिनका स्वरुप		४७	मनोबल ऋध्दि	
	५१			९८	
कोष्ठबुध्दि ऋध्दि धारकोंका स्वरुप			४८	वचनबल ऋध्दि	
	व उनको नमस्कार	५३		९८	
२१	बीजबुध्दि ऋध्दि धारकोंका स्वरुप		४९	कायबल ऋध्दि	
	५५			९९	
२२	पदानुसारि ऋध्दिका स्वरुप		५०	क्षीरस्त्रवी ऋध्दि	
	६०			९९	
२३	सम्भिन्नश्रोतृ ऋध्दिका स्वरुप		५१	सर्पिस्त्रवी ऋध्दि	१००
	६१		५२	मधुस्त्रवी ऋध्दि	१००
ऋजुमतिमन-पर्ययज्ञानका स्वरुप			५३	अमृतस्त्रवी ऋध्दि	
	व उसकेविषयका प्रमाण		१०१		
	६२		५४	अक्षीणमहानस ऋध्दि	१०१
विपुलमतिमन: पर्ययज्ञानका स्वरुप			५५	सर्व सिध्दायतनोंको नमस्कार	१०२
	व उसकेविषयका प्रमाण		५६	वर्धमान बुध्दर्षिको नमस्कार	
	६६		१०३		
दशपूर्व ऋध्दि धारकोकेभेद			भूतबलि भट्टारक द्वारा किया		
	व उनका स्वरुप			गया मंगल निबध्द है या	

६९
२७ चतुर्दशपूर्व ऋध्दि धारकोंका स्वरुप
७०
२८ आठ महानिमित्तोंका स्वरुप
७२
विक्रिया ऋध्दिकेआठ भेद
व उनका स्वरुप
७५
विद्याधरजिन-नमस्कारमें जाति,
कुल व तप विद्याओंका स्वरुप
७७
चारण ऋध्दि धारकोंकेआठ
भेद व उनका स्वरुप
७८
अन्य चारण ऋध्दि धारकोंका
उक्त आठोंमें यथासंभव अन्तर्भाव
८१
प्रज्ञाश्रवणनमस्कारमें प्रज्ञाकेचार
भेद व उनका स्वरुप ८१
३४ आकाशगामित्व ऋध्दिका स्वरुप
८४
३५ आशीर्विष ऋध्दि धारकोंका स्वरुप
८५
३६ दृष्टिविष व दृष्टि-अमृत ऋध्दि
धारकोंका स्वरुप
८६
अनिबध्द, इस शंकाका समाधान १०३
यह मंगल वेदना, वर्गणा और महाबंध,
इन तीनों खण्डोंका मंगल है,इसकी सिध्दि १०५
५९ निमित्त, हेतु, नाम व प्रमाणकी प्ररुपणा
१०६
कर्तृप्ररुपणा १०७-१३०
६० द्रव्यसे अर्थकर्ताकी प्ररुपणामें भगवान्
महावीरकेशरीरका वर्णन
१०७
६१ क्षेत्रप्ररुपणामें समवसरण-मण्डलका वर्णन
१०१
६२ वर्धमान भगवान्की सर्वज्ञता
११३
६३ भावप्ररुपणामें जीवकी सचे-तनतासिध्दि
११४
६४ जीवकी ज्ञान-दर्शनस्वभावता ११६
६५ कर्मोंकी अनित्यता
११७
६६ तीर्थोत्पत्तिकाल ११९
६७ भगवान महावीरका गर्भा-वतरणकाल
१२०
केवलज्ञान प्राप्त हो जानेपर भी
दिव्यध्वनि न खिरनेका कारण १२०
६९ वर्धमान भगवान्की आयुपर मतभेद
व तदनुसार गर्भस्थ-कालादिकी प्ररुपणा
१२१

	उग्रतप ऋध्दि धारकोंके भेद व उनका स्वरुप	८७	७०	ग्रन्थकर्ताकी प्ररुपणामें गण-धरका स्वरुप	१२६
३८	महातप ऋध्दि धारकोंका स्वरुप	९१	७१	वर्धमान भगवानके तीर्थमें ग्रन्थकर्ता इन्द्रभूति गणधरका वर्णन	१२९
३९	घोरतप ऋध्दि धारकोंका स्वरुप	९२		उत्तरोत्तरतंत्रकर्ताकी प्ररुपणामें केवली व श्रुतकेवली आदिकी परम्परा और उनका काल	१३०
४०	घोरपराक्रम और घोरगुण ऋध्दि धाराकोंका नमस्कार	९३	७३	शक राजाका समय	१३२

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
७४	भूतबलि भट्टारक द्वारा षटखण्डागमकी रचना	१३२		चयनलब्धिके कृति व वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंका निर्देश व उनकी विषयप्ररुपणा	२३१
	कृति वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंका निर्देश	१३४	१०३	कृतिके सात भेदोंका निर्देश	२३७
	उपक्रमका स्वरुप व उसके भेद प्रभेदादि	१३४	१०४	कृतियोंकी नयविषयता	२३८
७७	निक्षेपस्वरुप	१४०		नामकृतिकी प्ररुपणामें क्षणिकैकान्त -वादादिका निराकरण	२४६
७८	अनुगमप्ररुपणामें प्रमाणका स्वरुप व उसके भेद-प्रभेदोंका विस्तृत वर्णन	१४१	१०६	स्थापनाप्रकृतिकी प्ररुपणामें काष्ठकर्म आदिका स्वरुप	२४८
	नयप्ररुपणा	१६२-१८३	१०७	आगमद्रव्यकृतिकी प्ररुपणामें स्थित-जित आदि नौ अधिकारोंका स्वरुप	२५१
७९	नयस्वरुपका विचार	१६२			

८० द्रव्यार्थिकनयकी प्ररुपणामें द्रव्यके
सदादि विकल्पोंका दिग्दर्शन १६७
पर्यायार्थिकनयकेभेदोमें ऋजुसूत्र
नयका स्वरुप १७१
८२ शब्दनयका स्वरुप
१७६ ८३ समभिरुढनयका स्वरुप
१७९
८४ एवम्भूतनयका स्वरुप १८०
८५ अर्थनय व शब्दनयका स्वरुप १८०
८६ नैगमनयकेतीन भेद व उनका स्वरुप
१८१
८७ नयोंकी समीचीनता व असमीचीनता
१८२
८८ उपनयका स्वरुप
१८२
८९ सात सुनयवाक्य
१८३
अग्रायणी पूर्वका उद्‌गम
१८४-२२५
ज्ञानका उपक्रमादि रुप चतुर्विध अवतार
श्रुतज्ञानकेचतुर्विध अवतारमें सामायिक
आदि चौदह भेद रुप अनंगश्रुतकी प्ररुपणा
१८६
अंगश्रुतकेचतुर्विध अवतारमें आचारांगादि
बारह अंगोकी विषयप्ररुपणा १९२
दृष्टिवादकेचतुर्विध अवतारमें चन्द्रप्रज्ञप्ति

१०८ वाचनाका स्वरुप व उसकेचार भेद
२५२
व्याख्याताओं व श्रोताओकेलिये द्रव्य,क्षेत्र,
काल व भावसे शुध्दिकरणका विधान
२५३
११० सूत्रसम आदिका स्वरुप २५९
१११ उक्त स्थित-जित आदि नौ अधिकार-
विषयक उपयोग व उसकेभेद
२६२
कृतिकेविषयमें आठ प्रकारके
उपयोगकी प्ररुपणा २६३
नैगमादिक नयोंकी अपेक्षा
अनुपयुक्तकी प्ररुपणा २६४
११४ नोआगमद्रव्यप्रकृतिकेतीन भेदोंमें
ज्ञायकशरीरद्रव्यकृतिकेस्थित आदि
नौ अनुयोगोंका स्वरुप २६७
११५ ज्ञायकशरीरद्रव्यकृतिका स्वरुप २६९
११६ भावी नोआगमद्रव्यकृतिका स्वरुप
२७१
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्य-कृतिके
ग्रन्थिम-वाइम आदि अनेक भेद व
उनका स्वरुप
गणनकृतिप्ररुपणा २७४-
३२१
११८ गणनकृतिका स्वरुप व उसकेभेद
२७४

आदि पांच अधिकारोंका विषय २०४ ९४ सूत्रका पदप्रमाण व विषय २०७ ९५ प्रथमानुयोगका पदप्रमाण व विषय २०८ ९६ पूर्वकृतका पदप्रमाण व विषय २०९ ९७ पांच प्रकार चूलिकाओंका पदप्रमाण व विषय २०९ ९८ पूर्वगतके चतुर्विध अवतारमें चौदह पूर्वोंका पदप्रमाण व विषय २१० ९९ अग्रायणी पूर्वका चतुर्विध अवतार २२५ १०० चयनलब्धिका चतुर्विध अवतार २२७ १०१ कर्मप्रकृतिप्राभृतका चतुर्विध अवतार २२९	११९ कृति नोकृति व अवक्तव्य-कृतिकी प्ररुपणामें प्रथमानुगम आदि चार अनुयोगद्वार २७७ १२० द्रव्यप्ररुपणानुगम २८१ १२१ क्षेत्रानुगम २८५ १२२ स्पर्शानुगम २८७ १२३ कालानुगम २९१ १२४ अन्तरानुगम ३०४ १२५ भावानुगम ३१५ १२६ अल्पबहुत्वानुगम ३१८ १२७ ग्रन्थकृतिकी प्ररुपणा ३२१

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
	करणकृतिप्ररुपणा		१३५	द्रव्यप्रमाण	३५८
३२४-४५१			१३६	क्षेत्रानुगम	३५४
१२८	मूलकरणकृतिके भेद	३२४	१३७	स्पर्शाननुगम	३७०
औदारिक, वैक्रियिक व आहारक-			१३८	कालानुगम	३८०
	शरीरमूलकरण-कृतिके संघातनादि		१३९	अन्तरानुगम	४०२
	तीन भेदोंकी प्ररुपणा	३२६	१४०	भावानुगम	४२८
१३०	तैजस व कार्मणशरीर सम्बन्धी परिशातन		१४१	स्वस्थान अल्पबहुत्व	४२९
	व संघातनपरिशातन कृतियोंकी प्ररुपणा		१४२	परस्थान अल्पबहुत्व	४३८
३२८			१४३	उत्तरकरणकृतिका स्वरुप व भेद	

१३१	मूलकरणकृतियोंकी प्ररुपणामें पदमीमांसा		४५०		
३२९			१४४	भावकृतिका स्वरुप	
१३२	स्वामित्व		४५१		
३२९			१४५	गणनकृतिकी प्रधानता	४५२
१३३	अल्पबहुत्व	३४६			
१३४	सत्यप्ररुपणा	३५४			